सतनामी समाज अपना महत्व कैसे बनाये?

सामाजिक मूल्य बनाना समाज के प्रत्येक बुद्धिजीवि व्यक्ति का काम है।

छत्तीसगढ़ आदिवासी बाहुल्य राज्य है इसमें कोई दो मत नहीं। आंकड़ों के आधार पर 32% बतलाया जाता है परन्तु ये कई समुदायों में बंटे हैं। बिलासपुर से ऊपर अंबिकापुर, जशपुर की ओर जाते है तो उरांव व कंवर मुख्य जातियॉ है। जहॉ कोयला और बाक्साइट का भण्डार है। यहॉ पांडो कोरकू जैसे अति-अविकसित समुदाय भी निवास करती है जो कोदो, कुटकी, यहॉ तक बंदर का मांस खाकर जीवन यापन चलाते है। वहीं गोंड जाति की संख्या कोटा तानाखार व मध्यप्रदेश की सीमावर्ती क्षेत्र से लगा हुआ राजनांदगांव तक फैला हुआ है। रायपुर, धमतरी से नीचे की ओर जाते हैं तो पूरा बस्तर संभाग खनिज संपदाओं से भरपूर आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है जहॉ गोड़ों की विभिन्न उपजातियॉ निवास करती है। मूडिया-मारिया से लेकर अबूझमारिया जिनके बदन में कपड़े भी नहीं मिलेंगे। ये स्वतंत्र समुदाय है जो हिन्दु व्यवस्था के अधीन न होते हुए भी आज उन्ही के करीब नजर आते है और सबसे ज्यादा शोषण उन्ही का हो रहा है। जल, जंगल और जमीन तीनों से इन्हें बेदखल किया जा रहा है। गोड और कंवर आदिवासी सवर्ण हिन्दुओं के करीब होने के कारण विकास नहीं कर पा रहे है बल्कि नक्सलवाद के नाम पर इन आदिवासियों का सफाया अभियान भाजपा के शासनकाल में धड़ल्ले से जारी है और पिछले दशक में पूरा बस्तर से राजनांदगांव तक आधा छत्तीसगढ़ इससे प्रभावित हुआ है। पूरा बस्तर संभाग आर्थिक विपन्नता के दौर से गुजर रहा है। ईसाई मिशनरी के कारण रायगढ़, जशपुर, अंबिकापुर जिलों के उरांव आदिवासियों को छोड़कर शेष पूरा गोड़ हल्वा आदिवासी समुदाय आज भी शिक्षा से कोसों दूर है। आज सबसे ज्यादा उरांव आदिवासी प्रशासनिक सेवा में आगे है किन्तु घर वापसी अभियान के तहत उरांव आदिवासियों को बड़े पैमाने पर सताया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ के मध्यभाग में ज्यादातर अनुसुचित जातियॉ निवास करती है तो बाहरी भाग में जनजातियॉ निवास करती है। पिछड़ी जातियॉ यहॉ वहॉ बिखरा हुआ है। इसके बावजूद सतनामी समाज जनसंख्या के आधार पर अकेला छत्तीसगढ़ का महत्वपूर्ण समुदाय माना जाता है। 90 विधानसभा सीटों में से मध्य छत्तीसगढ के 50 सीटों पर सतनामी समाज की बहुलता है। जिसमें से 25 सीटों पर प्रत्यक्ष और शेष 25 सीटों पर परोक्ष रूप से निर्णायक भूमिका अदा करती है। सतनामी समाज मुख्यतः तीन समुहों में पाया जाता है रामनामी, सतनामी और सूर्यवंशी जिनका आपस में खान- पान, लेन- देन किसी न किसी रूप में चलता है। महार, गांड़ा, गंड़वा, घसिया, दुसाध आदि कई और महत्वपूर्ण अनुसुचित जातियॉ है जो संख्या के आधार पर नगण्य है। अनुसुचित जाति के लिए आज 10 सीटें आरक्षित है और 15 सामन्य ऐसी सीटें है जहॉ सतनामी केवल अपने दम पर जीत दर्ज करा सकती है जिसमें पामगढ़ लम्बे अंतराल तक सामन्य सीट था और लगातार सतनामी प्रत्याशी जीतते आया है आज यह आरक्षित सीट बना दिया गया है। सीपत का नाम बदलकर आज बेलतरा कर दिया गया है पर वहॉ भी दो ब्राह्मणों को हराकर पूर्व में सतनामी प्रत्याशी ने जीत दर्ज कराया है। सामन्य सीटों में खासकर अकलतरा, चांपा, चन्दरपुर, कसडोल, बलौदाबाजार, बिल्हा,

भांठापारा, बेमेतरा, लोरमी, तखतपुर, कवर्धा, खैरागढ़, पाटन, गूंडरदेही, धमधा, अभनपुर, राजिम, धमतरी, कुरूद, महासमुंद आदि कई क्षेत्र में निर्णायक स्थिति में हें। वहीं रायपुर बिलासपुर रायगढ़ दुर्ग व राजनांदगांव जैसे शहरों के आस पास बड़े पैमाने पर सतनामी समाज व अन्य दलित जातियॉ निवास करते है जिनकी मर्जी के बगैर कोई भी राजनीतिक दल विधानसभा में प्रवेश नहीं कर पायेगा।

भले ही सामाजिक आधार पर गैरबराबरी आज भी मौजूद है। वर्ण और जाति व्यवस्था के कारण एक आदमी का एक आदमी जैसे कीमत नहीं है। पूरा हिन्दू संप्रदाय वर्ण और जाति में बंटा हुआ है। धार्मिक आधार पर वर्ण भेद ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यथावत प्राचलित है। जबकि हर वर्ण व जाति समाज में एक से एक विद्वान संस्कृत भाषा में पारंगत मिलेंगे पर आज वैज्ञानिक युग में पुरोहिताई अभी भी ब्राह्मणों के लिए आरक्षित व सुरक्षित है, पूरे हिन्दु संप्रदाय का धार्मिक क्रिया कलाप उन्ही तक सीमित है। सारा हिन्दु संप्रदाय खासकर पिछड़ा वर्ग अर्थात शूद्र समुदाय सुबह से शाम तक उन्हीं के ईशारे पर नाचती है। यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि इनके हर सांस पर ब्राह्मणों का कब्जा है। शूद्रों की ही कौन कहे क्षत्रिय–वैश्य भी उनके मर्जी के वगैर सांस नहीं ले सकते। लेकिन वैश्य और क्षत्रिय दोनों सवर्ण जातियॉ ब्राह्मणों के साथ समझौता करके चलते है क्योंकि एक के पास व्यापर है तो दूसरे के पास जमींदारी है। लेकिन शेष हिन्दुओं अर्थात शूद्रों के पास जाति के अलावा कुछ भी नही है पर जनसंख्या में इनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। ये जातियों में बंटे होने के कारण मजबूर, कमजोर, लाचार व गुलाम नजर आते है। इस तरह सामाजिक, धार्मिक आधार पर गैरबराबरी आज भी यथावत मौजूद है पर राजनीति में आज प्रजातंत्र के कारण एक आदमी का एक वोट और एक वोट का एक ही कीमत होता है। यह अधिकार संविधान के तहत प्रत्येक भारतीय नागरिक को प्राप्त है। छत्तीसगढ़ में खासकर शूद्रों में कुर्मी, साहू, केवट, यादव, पनिका, नाई, धोबी, मरार, पटेल जो आज पिछड़ी जाति के नाम से भी जाने जाते है काफी संख्या में है पर नेतृत्व के अभाव में मुट्ठीभर सवर्णो के आगे पीछे दुम हिलाते फिरते है, सबसे ज्यादा शोषण के शिकार है। बन्दीछोर संत कबीर भी इन्हें मानसिक बन्दीगृह से मुक्त नहीं करा सके। उनके सतनाम आंदोलन से साहू, कुर्मी, पनिका आदि कई जातियॉ जरूर प्रभावित हुए है पर पुनः रूढ़िवाद और अंधविश्वास से चक्कर में जकड़े होने के कारण संत कबीर की वाणी का असर भी जाता रहा और आज वे बूरी तरह उन्हीं शोषकों के चंगुल में जा फंसे नजर आते है। आज सिख समुदाय भी सतनाम के आन्दोलन को जन आन्दोलन नहीं बना पाये और हिन्दुओं के करीब जा बैठे। गुरूनानक की वाणी और सतनाम केवल गुरूद्वारा तक सीमट कर रह गयी।

ऐसा माना जाता है कि एक समय पूरा छत्तीसगढ़ कांग्रेस पार्टी के कब्जे में थी। खासकर अनु जाति और जनजाति इनका मुख्य वोट बैंक रहा है। लेकिन **1984** के दशक में जबसे बहुजन समाज पार्टी का उदय हुआ तबसे कांग्रेस का मुख्य जनाधार दलित वोट बैंक बसपा की ओर खिसकता गया और कांग्रेस कमजोर होती गयी। भाजपा लंबे अंतराल से यहॉ शून्य की स्थिति में थी, बसपा के उदय के साथ अपना पैर पसारना शुरू कर दिया। यही स्थिति उत्तरप्रदेश में रही है, पर बसपा और सपा दोनों ने भाजपा जैसे सांप्रदायिक शक्ति को ज्यादा देर उभरने नहीं दिया। लेकिन नेतृत्व के अभाव में छत्तीसगढ़ में बसपा उभर नहीं पायी, जिसका लाभ सांप्रदायिक ताकतों ने उठाया और **2003** के बाद से लगातार दो पंचवर्षी से सत्ता में काबिज

कर रखी है। भाजपा का मुख्य आधार या ब्रेन बैंक आरएसएस ने पिछड़ी जाति खासकर साहू व कुर्मी के साथ साथ बाहर से आये मुट्ठीभर बनिया व्यापारियों के सहारे यहॉ पैर जमाना शूरू किया और यहॉ के सामाजिक सौहार्द्र को बिगाड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ा। पिछड़ी जातियों में शिक्षा की कमी व सामाजिक चेतना के आभाव में उन्ही शोषकों के चंगुल में जकड़े नजर आते है जिसका स्पष्ट लाभ भाजपा को मिल रहा है। कुर्मी– साहू एक समय यहॉ मध्यम जमीदारों की श्रेणी में आते थे अब वे बिखरकर कमजोर व लाचार नजर आते है। वे ऊपर उठ नहीं पा रहे है बल्कि दिन प्रतिदिन नीचे की ओर तेजी से जरूर खिसकते नजर आ रहे है। करमकाण्ड में फंसे केवट कलार कोष्टा यादव मरार सोनार कसेर पनिका नाई धोबी आदि जो पिछलग्गू पिछड़ी जातियॉ है वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व नही बना पाती और इन्हीं कुर्मी– साहु के पीछे हो लेती है आज अत्यंत कमजोर लाचार और दयनीय हालत में नजर आती है। उनके वोट से उनके ही जमीन पर कब्जाये मुट्ठीभर बाहरी वैश्य व्यापारी वर्ग राज करते जरूर देखे जा सकते है।

ताराचंद साहू जो एक समय भाजपा से सांसद रहे है। जब उनके स्वाभिमान को धक्का लगा तो वे तलमिला उठे और स्वाभिमान मंच बना बैठे। आज उनके निधन के बाद उनका बेटा दीपक ने कमान थाम लिया है और यह खुशी की बात है कि सांप्रदायिकता के खिलाफ साहू समाज लामबन्द होते दिख रही है जिसका असर अन्य पिछड़ी जातियों में भी पड़ता दिखाई पड़ रहा है। अरविन्द नेताम जो एक समय आदिवासियों के जाने माने नेता थे असरहीन दिखाई पड़ते हैं, जो सांगमा जी के साथ एनपीपी में चले जाने से एनडीए के सहयोगी भाजपा के करीब नजर आते है। अरविंद नेताम जी जो एक समय सांप्रदायिक ताकतों के घोर विरोधी थे आज उन्ही के संरक्षक नजर आते है।

आज छत्तीसगढ़ सांप्रदायिक ताकतों के चंगुल में बुरी तरह जकड़ता नजर आ रहा है रूढ़िवाद और अंधविश्वास अपने चरम सीमा पर है जिसके विरूद्ध प्राचीनकाल से हमारे सन्त गुरूओं ने अपना संघर्ष जारी रखा है। आज यहॉ की मूल संस्कृति खतरे में है जो दिन प्रतिदिन सतनाम आन्दोलन के लिए घातक सिद्ध हाने जा रहा है ऐसे में सन्त कबीर व गुरू घासीदास के अनुयायी सतनाम के अनुयायी सिख, कबीरपन्थी, सतनामी व अल्पसंख्यक, मूलनिवासी समाज सब मिलकर आगामी चुनाव में सांप्रदायिक ताकतों को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने की स्थिति मे दिखाई पड़ता है। मात्र 16‰ सतनामी समाज इस स्थिति पर नहीं है कि वह अपने दम पर सत्ता को हथिया सके, बल्कि यह 32‰ आदिवासियों के लिये यह एक बार संभव हो सकता है। लेकिन दोनों मिलकर कुल 48‰ लोग संगठित होकर तो छत्तीसगढ़ में कभी भी अखण्ड राज कर सकते है जो वर्तमान समय में संभव नहीं लगता। फिर भी यदि सतनामी समाज एक होकर सांप्रदायिक ताकतों के खिलाफ लामबन्द होता है तो निश्चय ही वे केरल के ईड्वा जाति की तरह राजनीति को प्रभावित कर सकता है। इससे न केवल सत्ताधारी वर्ग का गणित गवड़ायेगा वरन् आगे की राजनीति का धारा भी बदल जायेगा और कभी भी सतनामी समाज किसी को भी उखाड़कर फेंक सकता है। आज हमारा अस्तित्व खतरे में है। समाज को चन्द ठेकेदारों से मुक्त कराकर बिकाऊ समाज के बदले टिकाऊ समाज बनाना व समाज को सही दिशा मे ले जाना बुद्धिजीवि वर्ग का काम है और यही सामाजिक मूल्य है। इस तरह सतनामी समाज अपनी एकता का परिचय देकर अपना कीमत व सामाजिक मूल्य बना सकता है।

दुश्मन चाहता है कि सतनामी समाज सांप्रदायिकता के खिलाफ लामबन्द न हो अन्यथा वे सत्ता से दूर हो जायेंगे अतः सतनामियों के वोट को बिखेरने में उनका हित है। यदि सतनामी समाज के कई निर्दलीय प्रत्याशी खड़े हो जाते हैं तो कुछ नाते रिश्तों के वोट बिखरकर कचड़े के टोकरी में चला जायेगा। हमें भावनाओं से ज्यादा तर्कसंगत बुद्धिपरक होना होगा। वे हमे मूल्यहीन बनाना चाहते है हम उन्हें अपना प्रजातांत्रिक अधिकार का उपयोग कर मूल्यहीन बना सकते है। एक साथ सांप्रदायिक शक्तियों के खिलाफ जीतने वाले प्रत्याशी के साथ लामबन्द हो जाता है तो उनका वोट मूल्यवान हो जायेगा और सत्ता परिवर्तन में हिस्सेदार बन जायेगा। जिससे सत्ताधारी वर्ग भी घबड़ायेगा और हमारे हितों को अनदेखा नहीं कर पायेगा। इस तरह सतनामी समाज एक बार लामबन्द होकर देखे अपने ताकत पर भरोसा रखे तो वह अपने मान सम्मान की रक्षा करते हुए हक और हुकुमत को हासिल कर सकता है। आओ हम सब सांप्रदायिकता के खिलाफ अपने वोटों का कीमत बनाये और समाज को मूल्यवान बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान करें।

सामाजिक मूल्य बनाना समाज के प्रत्येक बुद्धिजीवि व्यक्ति का काम है।

टी आर खुंटे
पूर्व महाप्रबंधक राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम व
उपाध्यक्ष ग्लोबल इनर्जी व अथेना पावर छत्तीसगढ़

रमनसिंह और भाजपा सरकार घोर दलित, आदिवासी व पिछड़ा विरोधी

कल दिनांक 30 सितम्बर 2013 को आईबीसी 24 मे दिये गये बयान से साबित होता है कि मुख्यमंत्री श्री रमनसिंह और भाजपा सरकार छत्तीसगढ़ के मूलनिवासी अनु. जाति, जन जाति व पिछड़े समुदाय जो कुल आबादी दो करोड़ का लगभग 92‰ होता है उनके हितों की रक्षा करने में न केवल अक्षम नजर आता है वरन् बहुसंख्यक वर्ग के विकास का घोर विरोधी नजर आता है। आपने कहा कि अनु. जाति के आरक्षण घटाये जाने का मुद्दा केन्द्र सरकार के अधिकार व संस्तुति का विषय है। तो क्या रमनसिंह जी ये भी स्वीकार करेंगे कि अनु. जनजाति व पिछड़े वर्ग का जो आरक्षण कोटा 32‰ व 12‰ बढ़ाया गया वह भी केन्द्र सरकार के संस्तुति से हुआ है फिर वे किस मुंह से भाजपा सरकार की उपलब्धि बताने में तुले है। दोनो वक्तव्य में घोर विरोधाभास है। अंतः रमन जी को यह बात मान लेनी चाहिये कि उन्होंने मूलनिवासी बहुसंख्यक वर्ग के लिए कुछ नहीं किया केवल उनका शोषण किया। पिछले नौ सालों में एक के बाद एक विभत्स घटनाओं के जिम्मेदार कौन है भाजपा का घूमका कांड से लेकर सारंगगढ़ में दलित एसडीओ की कपड़ा खोल कर पिटा जाना व हाल ही में जांजगीर में भाजपा के वरिष्ठ नेता के भाई द्वारा हास्पिटल में घूस कर वरिष्ठ डाक्टर को मरते दम तक पिटाई किया जाना और उसमें भी सरकार द्वारा कोई विशेष कार्यवाही नही किया जाना व दलित आदिवासी डाक्टर, इंजिनियर, अधिकारी व कर्मचारियों को जानबूझकर नक्सल प्रभावित क्षेत्र में पोस्टिंग किया जाना, चीफइंजिनियर व विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार जैसे महत्वपूर्ण पदों में पदस्थ लोगों लाइन अटेच करना, साथ ही उद्योगपतियों के इशारे पर जबरदस्ती मूलनिवासियों को जल, जंगल और जमीन से बड़े पैमाने पर बेदखल किया जाना इस बात का पुख्ता सबूत है कि वर्तमान भाजपा सरकार छत्तीसगढ़ के 92‰ मूलनिवासियों कल घोर विरोधी है। यह भाजपा सरकार कुल मिलाकर पूंजीपतियों के हितों की रक्षा करने में तुली है।

पिछड़ी जाति के लोगों ने इस आशा के साथ पिछले चुनाव में खुल कर समर्थन किया कि ये उनके हितों की रक्षा करेंगे। लेकिन बाहर से आये एक वर्ग विशेष जिनकी संख्या मात्र दो प्रतिशत होगी उनके तीन– तीन केबिनेट मंत्री बनाकर बड़े महत्वपूर्ण विभागों को सौपा गया जहॉ वे लोग जी भर कर लूट मचाये। छत्तीसगढ़ को खोखला कर दिये। चंद विचौलियों को छोड़कर पूरा पिछड़ा समुदाय आज लूटा पिटा महशूस कर रहा है।

छत्तीसगढ़ को आदिवासी बाहुल राज्य माना जाता है आज नक्सलवाद के नाम पर दोनों तरफ से सफाया किया जा रहा है। विकास के नाम पर छत्तीसगढ़ का चारों ओर केवल विनाश ही नजर आता है। आदिवासी समुदाय आज भी लंगोटी से बाहर नहीं निकल पाया अबूझमारिया ही बना रहा। संविदा नियुक्ति शिक्षको को नियमित ना कर शिक्षा के स्तर को बूरी तरह गिराकर, एक रूपया किलो चावल का धोखा, गांव गांव में शराब भट्टी खोल कर, चारों धाम के यात्रा व युवाओं सिनेमा देखने का टेबलेट के आड़ में जनता को जी भरके लूटा जा रहा है। लेकिन यहॉ की भोली भाली जनता अबकी बार इन्हें सबक जरूर सिखायेगी। अपने साथ हो रहे धोखा का बदला जरूर लेगी।

टी आर खुंटे
पूर्व महाप्रबंधक राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम व
उपाध्यक्ष ग्लोबल इनर्जी व अथेना पावर छत्तीसगढ़